प्रस्तावना

इलाहाबाद, पहले कौशाम्बी, एक पौराणिक नगर है, जिसमें लौह काल से मनुष्य निवास करते थे (उत्तरी काले चमकीले मृदभांड संस्कृति, 700 ई.पू.– 200 ई.पू.)। यह उत्तर प्रदेश प्रान्त के दक्षिण भाग में 25.45^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.84^0 पूर्वी अक्षांश पर समुद्र तल से 98 मीटर (322 फीट) ऊपर स्थित है। यह क्षेत्र वत्स[1] महाजनपद (600 ई.पू., बुद्ध काल) की राजधानी थी तथा इसका उल्लेख बौद्ध एवं हिन्दू पौराणिक पुस्तकों में किया गया है। तब से यह स्थान श्रद्धालुओं एवं तीर्थयात्रियों का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। इलाहाबाद में माघ के महीने में (सम्वत पंचांग के ग्यारहवें माह, जनवरी–फरवरी) आयोजित होने वाले मेलों को सामयिक आधार पर धार्मिक महत्व के अनुसार श्रेणीबद्ध किया गया है। महाकुम्भ मेला प्रत्येक 144 वर्ष, पूर्ण कुम्भ मेला प्रत्येक बारह वर्ष, अर्द्ध कुम्भ मेला प्रत्येक छः वर्ष तथा माघ मेला प्रति वर्ष, गंगा नदी तथा इसकी सहायक नदी यमुना के तट पर आयोजित किया जाता है। इन नदियों के मिलन स्थल को संगम के नाम से जाना जाता है जो मेला का केन्द्र बिन्दु है।

महाकुम्भ मेला क्या है?

कुम्भ मेला संस्कृत के दो शब्दों– ''कुम्भ से तात्पर्य एक पात्र तथा मेला से तात्पर्य एकत्र होना'' का मिश्रित शब्द है। इसलिए कुम्भ मेला का तात्पर्य ''पात्र का एकत्र होना'' है। संस्कृत पुस्तकों (जैसे 'भागवत पुराण', 'विष्णु पुराण', 'महाभारत' तथा 'रामायण') में पौराणिक समुद्र मन्थन से मेला के उद्गम का संकेत किया गया है, जिसमें ''अमृत'' युक्त एक पात्र प्रकट होने का उल्लेख है। बाद में अच्छाई एवं बुराई (देवों एवं दानवों) के मध्य घटित युद्ध में अमृत की बूदें छलककर प्रयाग (इलाहाबाद), हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में गिरीं जिसके फलस्वरूप इन स्थानों को विशेष धार्मिक महत्व दिया गया।

वर्ष 2013 में, महाकुम्भ मेला इलाहाबाद में 14 जनवरी से 10 मार्च के मध्य 55 दिनों तक आयोजित हुआ था। इस वर्ष महाकुम्भ मेला के दौरान छः[2] मुख्य स्नान तिथियाँ थीं।

इलाहाबाद में महाकुम्भ मेला का आयोजन यूनाइटेड प्राविन्सेस मेला एक्ट, 1938 तथा यूनाइटेड प्राविन्सेस मेला नियम (विविध), 1940 के अन्तर्गत कराया जाता है।

संगठनात्मक ढाँचा

महाकुम्भ मेला हेतु शासन स्तर पर प्रमुख सचिव, नगर विकास विभाग नोडल अधिकारी थे। जनपद स्तर पर मेला अधिकारी नोडल अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे तथा वह महाकुम्भ मेला तथा सम्बन्धित कार्यों के प्रबन्धन, क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण के लिए उत्तरदायी थे। कार्यदायी इकाइयों मे–(i) विभिन्न विभाग (ii) सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/सहकारी संघ (iii) शासन के स्वायत्तशासी निकाय (iv) स्थानीय निकाय तथा (v) भारत सरकार के मंत्रालय : (अ) वित्त (ब) पर्यावरण एवं वानिकी (स) रेलवे (द) संचार सम्मिलित थे।

---

[1] पहले कौशाम्बी के नाम से जाना जाने वाला सोलासा महा जनपदों (16 साम्राज्यों) में से एक तथा वर्तमान में पृथक जनपद कौशाम्बी के रूप में स्थापित।

[2] मकर संक्रान्ति–14 जनवरी; पौष पूर्णिमा–27 जनवरी; मौनी अमावस्या–10 फरवरी; बसन्त पंचमी–15 फरवरी; माघी पूर्णिमा–25 फरवरी; तथा महाशिवरात्रि–10 मार्च।

महाकुम्भ मेला के लिए संगठनात्मक ढाँचा निम्नानुसार थाः